

दुआ-47**दुआए रोज़े अरफ़ा****बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

सब तारीफ़ उस अल्लाह तआला के लिये हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है। बारे इलाहा! तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें हैं ऐ आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले, ऐ बुजुर्गी व एजाज़ वाले! ऐ पालने वालों के पालने वाले। ऐ हर परस्तार के माबूद! ऐ हर मखलूक के खालिक और हर चीज़ के मालिक व वारिस। उसके मिस्ल कोई चीज़ नहीं है और न कोई चीज़ इसके इल्म से पोषीदा है। वह हर चीज़ पर हावी और हर षै पर निगरां है। तू ही वह अल्लाह है के तेरे अलावा कोई माबूद नहीं जो एक अकेला और यकता व यगाना है। और तू ही वह अल्लाह है के तेरे अलावा कोई माबूद नहीं जो बख़्शने वाला और इन्तेहाई बख़्शने वाला अज़मत वाला और इन्तेहाई अज़मत वाला और बड़ा और इन्तेहाई बड़ा है। और तू ही वह अल्लाह है के तेरे सिवा कोई माबूद नहीं जो बलन्द व बरतर और बड़ी क़वत व तदबीर वाला है और तू ही वह अल्लाह है के तेरे सिवा कोई माबूद नहीं जो फ़ैज़े रसां, मेहरबान और इल्म व हिकमत वाला है और तू ही वह माबूद है के तेरे अलावा कोई माबूद नहीं, जो करीम और सबसे बढ़कर करीम और दाएम व जावेद है। और तू ही वह माबूद है के तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। जो हर षै से पहले और हर षुमार में आने वाली षै के बाद है। और तू ही वह माबूद है के तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। जो हर षै से पहले और हर षुमार में आने वाली षै के बाद है। और तू ही वह माबूद है के तेरे अलावा कोई माबूद नहीं जो (कायनात के दस्तेरस) से बाला होने के बावजूद नज़दीक और नज़दीक होने के बावजूद (फ़हम और इदराक से) बलन्द है। और तू ही वह माबूद है के तेरे सिवा कोई माबूद नहीं जो जमाल व बुजुर्गी और अज़मत व सताइष वाला है और तू ही वह अल्लाह (ज0) है के तेरे अलावा कोई माबूद नहीं। जिसन बग़ैर मवाद के तमाम चीज़ों को पैदा किया और बग़ैर किसी नमूना व मिसाल के सूरतों की नक़्ष आराई की और बग़ैर किसी की पैरवी के मौजूदात को खलअते वजूद बख़्शा। तू ही वह है जिसने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा ठहराया है और हर चीज़ को उसके वज़ाएफ़ की अन्जाम देही पर आमादा किया है और कायनाते आलम में से हर चीज़ की तद्वीर व कारसाज़ी की है। तो वह है के आफ़रीन्ष आलम में किसी षरीके कार ने तेरा हाथ नहीं बटाया और न किसी मआवुन ने तेरे काम में तुझे मदद दी है और न कोई तेरा देखने वाला और न कोई तेरा मिस्ल व नज़ीर था और तूने जो इरादा किया वह हतमी व लाज़मी और जो फ़ैसला किया वह अद्ल के तक़ाज़ों के ऐन मुताबिक़ और जो हुक्म दिया वह इन्साफ़ पर मबनी था। तू वह है जिसे कोई जगह घेरे हुए नहीं है और न तेरे इक्तेदार का कोई इक्तेदार मुकाबेला कर सकता है। और न तू दलील व बुरहान और किसी चीज़ को वाज़ेअ तौर पर पेश करने से आजिज़ है। तू वह है जिसने एक एक चीज़ को षुमार कर रखा है और हर चीज़ की

एक मुद्दत मुकर्रर कर दी है और हर शै का एक अन्दाजा ठहरा दिया है। तू वह है के तेरी कन्ह जात को समझने से वाहमे कासिर और तेरी कैफियत को जानने से अक्लें आजिज़ हैं। और तेरी कोई जगह नहीं है के आंखें उसका खोज लगा सकें। तू वह है के तेरी कोई हद व नेहायत नहीं है के तू महदूद करार पाए और न तेरा तसव्वुर किया जा सकता है के तू तसव्वुर की हुई सूरत के साथ ज़ेहन में मौजूद हो सके और न तेरे कोई औलाद है के तेरे मुताल्लिक किसी की औलाद होने का एहतेमाल हो। तू वह है के तेरा कोई मद्दे मुक्काबिल नहीं है के तुझसे टकराए और न तेरा कोई हमसर है के तुझ पर ग़ालिब आए और न तेरा कोई मिस्ल व नज़ीर है के तुझसे बराबरी करे। तू वह है जिसने खल्के कायनात की इब्तिदा की आलम को ईजाद किया और उसकी बुनियाद कायम की। और बग़ैर किसी मादा व अस्ल के उसे वजूद में लाया और जो बनाया उसे अपने हुस्ने सनअत का नमूना बनाया। तू हर ऐब से मुनज़्जह है। तेरी शान किस कद्र बुजुर्ग और तमाम जगहों में तेरा पाया कितना बलन्द और तेरी हक़ व बातिल में इम्तियाज़ करने वाली किताब किस कद्र हक़ को आशकारा करने वाली है। तू मुनज़्जह है ऐ साहेबे लुत्फ़ व एहसान तू किस कद्र लुत्फ़ फ़रमाने वाला है। ऐ मेहरबान तू किस कद्र मेहरबानी करने वाला है। ऐ हिकमत वाले तू कितना जानने वाला है। पाक है तेरी ज़ात ऐ साहेबे इक्तेदार! तू किस कद्र कवी व तवाना है। ऐ करीम! तेरा दामने करम कितना वसीअ है। ऐ बलन्द मरतबा तेरा मरतबा कितना बलन्द है तू हुस्न व ख़ूबी, शरफ़ व बुजुर्गी, अज़मत व किबरियाई और हम्द व सताइश का मालिक है। पाक है तेरी ज़ात तूने भलाइयों के लिये अपना हाथ बढ़ाया है तुझ ही से हिदायत का इरफ़ान हासिल हुआ है। लेहाज़ा जो तुझे दीन या दुनिया के लिये तलब करे तुझे पा लेगा। तू मुनज़्जह व पाक है। जो भी तेरे इल्म में है वह तेरे सामने सरनिगूँ और जो कुछ अर्श के नीचे है वह तेरी अज़मत के आगे सर ब ख़म और जुमला मखलूक़ात तेरी इताअत का जुवा अपनी गर्दन में डाले हुए है। पाक है तेरी ज़ात के न हवास से तुझे जाना जा सकता है न तुझे टटोला और छुआ जा सकता है। न तुझ पर किसी का हीला चल सकता है न तुझे दूर किया जा सकता है। न तुझसे निज़ाअ हो सकती है न मुक्काबला, न तुझसे झगडा किया जा सकता है और न तुझे धोका और फ़रेब दिया जा सकता है। पाक है तेरी ज़ात, तेरा रास्ता सीधा और हमवार, तेरा फ़रमान सरासर हक़ व सवाब और तू ज़िन्दा व बेनियाज़ है। पाक है तू, तेरी गुफ़्तार हिकमत आमज़, तेरा फ़ैसला क़तई और तेरा इरादा हतमी है। पाक है तू न तो कोई तेरी मषीयत को रद्द कर सकता है और न कोई तेरी बातों को बदल सकता है। पाक है तू ऐ दरख़शिन्दा निशानियों वाले। ऐ आसमानों के खल्क़ फ़रमाने वाले और ज़ी रूह चीज़ों के पैदा करने वाले तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें हैं। ऐसी तारीफ़ें जिनकी हमेशगी तेरी हमेशगी से वाबस्ता है और तेरे ही लिये सताइष है। ऐसी सताइष जो तेरी नेमतों के साथ हमेषा बाकी रहे और तेरे ही लिये हम्द व सना है। ऐसी जो तेरे करम व एहसान के बराबर हो और तेरे ही लिये हम्द है ऐसी जो तेरी रज़ामन्दी से बढ जाए। और तेरे ही लिये हम्द व सिपास है ऐसी जो हर हम्दगुज़ारी की हम्द पर मुश्तमिल

हो और जिसके मुकाबले में हर शुक्रगुजार का शुक्र पीछे रह जाए। ऐसी हम्द जो तेरे अलावा किसी के लिये सजावार न हो और न तेरे सिवा किसी के तकरूब का वसीला बने। ऐसी हम्द जो पहली हम्द के दवाम का सबब करार पाए और उसके जरिये आखिरी हम्द के दवाम की इल्तिजा की जाए ऐसी हम्द जो जमाने की गर्दिशों के साथ बढ़ती जाए और पै दरपै इजाफों से ज्यादा होती रहे। ऐसी हम्द के निगेहबानी करने वाले फरिश्ते उसके शुमार से आजिज आ जाएं। ऐसी हम्द जो कातिबाने आमाल ने तेरी किताब में लिख दिया है इससे बढ़ जाए। ऐसी हम्द जो तेरे अर्थ बुजुर्ग को हमवजन और तेरी बलन्द पाया कुर्सी के बराबर हो। ऐसी हम्द जिसका अज्र व सवाब तेरी तरफ से कामिल और जिस की जजा तमाम जजाओं को शामिल हो। ऐसी हम्द जिसका जाहिर बातिन से हमनवा और बातिन सिद्के नीयत से हमआहंग हो। ऐसी हम्द के किसी मखलूक ने वैसी तेरी हम्द न की हो और तेरे सिवा कोई उसकी फजीलत व बरतरी से आषना न हो। ऐसी हम्द के जो उसंे बकसरत बजा लाने के लिये कोशां हो उसे (तेरी तरफ से) मदद हासिल हो और जो उसे अन्जाम तक पहुंचाने के लिये सई बलीग करे। उसे तौफीक व ताईद नसीब हो। ऐसी हम्द जो तमाम इकसामे हम्द की जामेअ हो जिन्हें तू मौजूद कर चुका है और उन इकसाम को भी शामिल हो जिन्हें तू बाद में मौजूद करेगा। सरगर्म अमल, उनके जमानाए इकतेदार के मुन्तजिर और उनके लिये चश्मे बराह हैं। ऐसी रहमत जो बाबरकत, पाकीजा और बढ़ने वाली और हर सुबह व शाम नाजिल होने वाली हो और उन पर और उनके अरवाहे (तय्यबा) पर सलामती नाजिल फरमा और उनके कामों को सलाह व तकवा की बुनियादों पर कायम कर और उनके हालात की इस्लाह फरमा और उनकी तौबा कुबूल फरमा बेशक तू तौबा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला और सबसे बेहतर बखशने वाला है। और हमें अपनी रहमत के वसीले से उनके साथ दारुस्सलाम (जन्नत) में जगह दे, ऐ सब रहीमों से ज्यादा रहीम, परवरदिगारा! यह रोजे अरफा वह दिन है जिसे तूने शरफ, इज्जत और अजमत बखशी है जिसमें अपनी रहमतें फैला दीं और अपने अफो व दरगुजर से एहसान फरमाया। अपने अतियों को फरावां किया और उसके वसीले से अपने बन्दों पर तफज्जुल फरमाया है। ऐ अल्लाह! मैं तेरा वह बन्दा हूं जिसपर तूने उसकी खिलकत से पहले और खिलकत के बाद इनाम व एहसान फरमाया है। इस तरह के उसे उन लोगों में से करार दिया जिन्हें तूने अपने दीन की हिदायत की, अपने अदाए हक की तौफीक बखशी जिनकी अपनी रीसमां के जरिये हिफाजत की जिन्हें अपनी जमाअत में दाखिल किया और अपने दोस्तों की दोस्ती और दुश्मनों की दुश्मनी की हिदायत फरमाई है। बाई हमह तूने उसे हुक्म दिया तो उसने हुक्म न माना, और मना किया तो वह बाज्र न आया और अपनी मासियत से रोका तो वह तेरे हुक्म के खिलाफ अमे ममनूअ का मुरतकब हुआ। यह तुझसे अनाद और तेरे मुकाबले में तकब्बुर की रू से न था बल्कि ख्वाहिशे नफ्स ने उसे ऐसे कामों की दावत दी जिनसे तूने रोका और डराया था। और तेरे दुश्मन और उसके दुश्मन (शैतान मलऊन) ने उन कामों में उसकी मदद की। चुनांचे उसने तेरी धमकी से

आगाह होने के बावजूद तेरे अफ़ो की उम्मीद करते हुए और तेरे दरगुजर पर भरोसा रखते हुए गुनाह की तरफ़ इक़दाम किया। हालांके उन एहसानात की वजह से जो तूने उस पर किये थे। तमाम बन्दों में वह उसका सज़ावार था के ऐसा न करता। अच्छा फिर मैं तेरे सामने खड़ा हूँ बिल्कुल ख़वार व ज़लील, सरापा अज्ज व नियाज़ और लरज़ां व तरसां। इन इज़ीम गुनाहों का जिनका बोझ अपने सर उठाया है और उन बड़ी खताओं का जिनका इरतेकाब किया है एतराफ़ करता हुआ तेरे दामने अफ़ो में पनाह चाहता हुआ और तेरी रहमत का सहारा ढूँढता हुआ और यह यक्रीन रखता हुआ के कोई पनाह देने वाला (तेरे अज़ाब से) मुझे पनाह नहीं दे सकता और कोई बचाने वाला (तेरे ग़ज़ब से) मुझे बचा नहीं सकता। लेहाज़ा (इस एतराफ़े गुनाह व इज़हारे निदामत के बाद) तू मेरी पर्दापोशी फ़रमा जिस तरह गुनाहगारों की पर्दापोशी फ़रमाता है और मुझे माफ़ी अता कर जिस तरह उन लोगों को माफ़ी अता करता है। जिन्होंने अपने आप को तेरे हवाले कर दिया हो और मुझ पर इस बख़्शिश व आमज़िश के साथ एहसान फ़रमा के जिस बख़्शिश व आमज़िश से तू अपने उम्मीदवार पर एहसान करता है तो तुझे बड़ी नही मालूम होती। और मेरे लिये आज के दिन ऐसा हिज़ व नसीब करार दे के जिसके ज़रिये तेरी रज़ामन्दी का कुछ हिस्सा पा सकूँ और तेरे इबादतगुज़ार बन्दे जो (अज़्र व सवाब के) तहाएफ़ ले कर पलटे हैं मुझे उनसे ख़ाली हाथ न फेर। अगरचे वह नेक आमाल जो उन्होंने आगे भेजे हैं मैंने आगे नहीं भेजे लेकिन मैंने तेरी वहदत व यकताई का अक़ीदा और यह के तेरा कोई हरीफ़ शरीक और मिस्ल व नज़ीर नहीं है पेश किया है और इन्हीं दरवाज़ों से जिन दरवाज़ों से तूने आने का हुक्म दिया है आया हूँ और ऐसी चीज़ के ज़रिये जिसके बग़ैर कोई तुझसे तक्ररूब हासिल नहीं कर सकता तक्ररूब चाहा है। फिर तेरी तरफ़ रूजू व बाज़ग़शत, तेरी बारगाह में तज़ल्लुल व आजिज़ी और तुझसे नेकगुमान और तेरी रहमत पर एतमाद को तलब तक्ररूब के हमराह रखा है और उसके साथ ऐसी उम्मीद का ज़मीमा भी लगा दिया है जिसके होते हुए तुझसे उम्मीद रखने वाला महरूम नहीं रहता और तुझसे उसी तरह सवाल किया है जिस तरह कोई बेक़द्र ज़लील षिकस्ता हाल तही दस्त ख़ौफ़ ज़दा और तलबगारे पनाह सवाल करता है और इस हालत के बावजूद मेरा यह सवाल ख़ौफ़, अज्ज व नियाज़मन्दी, पनाहतलबी और अमानख़वाही की रू से है न मुतकब्बिरों के तकब्बुर के साथ बरतरी जतलाते, न इताअतगुज़ारों के (अपनी इबादत पर) फ़ख़र व एतमाद की बिना पर इतराते और न सिफ़ारिश करने करने वालों की सिफ़ारिश पर सर बलन्दी दिखाते हुए। और मैं इस एतराफ़ के साथ तमाम कमतरों से कमतर, ख़वार व ज़लील लोगों से ज़लीलतर और एक च्यूटी के मानिन्द बल्कि उससे भी पस्ततर हूँ। ऐ वह जो गुनाहगारों पर अज़ाब करने में जल्दी नहीं करता और न सरकशों को (अपनी नेमतों से) रोकता है। ऐ वह जो लग्ज़िश करने वालों से दरगुजर फ़रमाकर एहसान करता है और गुनहगारों को मोहलत देकर तफ़ज़्जुल फ़रमाता है। मैं वह हूँ जो गुनहगार गुनाह का मोतरफ़, खताकार और लग्ज़िश करने वाला हूँ मैं वह हूँ जिसने तेरे मुकाबले में जराअत से काम लेते हुए पेश क़दमी की। मैं वह हूँ जिसने दीदा

दानिस्ता गुनाह किये मैं वह हूँ जिसने (अपने गुनाहों को) तेरे बन्दों से छुपाया और तेरे सामने खुल्लम खुल्ला मुखालफत की। मैं वह हूँ जो तेरे बन्दों से डरता रहा और तुझसे बेखोफ रहा। मैं वह हूँ जो तेरी हैबत से हरासां और तेरे अज़ाब से खोफ़ज़दा न हुआ। मैं खुद ही अपने हक़ में मुजरिम और बला व मुसीबत के हाथों में गिरवी हूँ मैं ही शर्म व हया से आरी और तवील रंज व तकलीफ़ में मुब्तिला हूँ। मैं तुझे उसके हक़ का वास्ता देता हूँ जिसे तूने मखलूक़ात में से मुन्तख़ब किया। उसके हक़ का वास्ता देता हूँ जिसे तूने अपने लिये पसन्द फ़रमाया, उसके हक़ का वास्ता देता हूँ जिसे तूने कायनात में से बरगुज़ीदा किया और जिसे अपने एहकाम (की तबलीग) के लिये चुन लिया। उसके हक़ का वास्ता देता हूँ जिसकी इताअत को अपनी इताअत से मिला दिया और जिसकी नाफ़रमानी को अपनी नाफ़रमानी के मानिन्द करार दिया। उसके हक़ का वास्ता देता हूँ जिसकी मोहब्बत को अपनी मोहब्बत से मकरून और जिसकी दुश्मनी को अपनी दुश्मनी से वाबस्ता किया है। मुझे आज के दिन इस दामने रहमत में ढांप ले जिससे ऐसे शख्स को ढांपता है जो गुनाहों से दस्तबरदार होकर तुझसे नाला व फ़रियाद करे और ताएब होकर तेरे दामने मग़फ़रत में पनाह चाहे और जिस तरह अपने इताअत गुज़ारों और और कुर्ब व मन्ज़िलत वालों की सरपरस्ती फ़रमाता है इसी तरह मेरी सरपरस्ती फ़रमा और जिस तरह उन लोगों पर जिन्होंने तेरे अहद को पूरा किया तेरी खातिर अपने को ताब व मशक्कत में डाला और तेरी रज़ामन्दियों के लिये सख्तियों को झेला। खुद तनो तन्हा एहसान करता है उसी तरह मुझ पर भी तनो तन्हा एहसान फ़रमा और तेरे हक़ में कोताही करने तेरे हुदूद से मुतजावज़ होने और तेरे एहकाम के पसे पुशत डालने पर मेरा मोवाखेज़ह न कर और मुझे उस शख्स के मोहलत देने की तरह मोहलत देकर रफ़ता रफ़ता अपने अज़ाब का मुस्तहक़ न बना जिसने अपनी भलाई को मुझसे रोक लिया और समझता यह है के बस वही नेमत का देने वाला है यहां तक के तुझे भी उन नेमतों के देने में षरीक न समझा हो। मुझे ग़फ़लत शआरों की नीन्द, बेराहरवों के ख़्वाब और हरमां नसीबों की ग़फ़लत से होशियार कर दे और मेरे दिल को इस राहे अमल पर लगा जिस पर तूने इताअत गुज़ारों को लगाया है और इस इबादत की तरफ़ माएल फ़रमा जो इबादत गुज़ारों से तूने चाही है। और उन चीज़ों की हिदायत कर जिनके वसीले से सहल अंगारों को रिहाई बख़्शी है। और जो बातें तेरी बारगाह से दूर कर दीं और मेरे और तेरे हां के हज़ व नसीब के दरम्यान हाएल और तेरे हां के मक़सद व मुराद से मानेअ हो जाएं उनसे महफूज़ रख और नेकियों की राह पैमाई और उनकी तरफ़ सबक़त जिस तरह तूने हुक्म दिया है और उनकी बढ चढ कर ख़्वाहिश जैसा के तूने चाहा है मेरे लिये सहल व आसान कर और अपने अज़ाब व वईद को सुबुक समझने वालों के साथ के जिन्हें तू तबाह करेगा, मुझे तबाह न करना और जिन्हें दुश्मनी पर आमादा होने की वजह से हलाक करेगा, उनके साथ मुझे हलाक न करना और अपनी सीधी राहों से इन्हेराफ़ करने वालों के ज़मरह में के जिन्हें तू बरबाद करेगा मुझे बरबाद न करना और फ़ित्ना व फ़साद के भंवर से मुझे निजात दे और बला के मुंह से छुड़ा ले और ज़मानाए

मोहलत (की बदआमालियों) पर गिरफ्त से पनाह दे और उस दुश्मन के दरम्यान जो मुझे बहकाए, और उस ख्वाहिशे नफ़स के दरम्यान जो मुझे तबाह व बरबाद करे, और उस नक्स व ऐब के दरम्यान जो मुझे घेर ले, हाएल हो जा। और जैसे उस शख्स से के जिस पर ग़ज़बनाक होने के बाद तू राजी न हो रूख फेर लेता है इसी तरह मुझ से रूख न फेर और जो उम्मीदें तेरे दामन से वाबस्ता किये हुए हों उनमें मुझे बे आस न कर के तेरी रहमत से यास व नाउम्मीदी मुझ पर ग़ालिब आ जाए और मुझे इतनी नेमतें भी न बख़्श के जिनके उठाने की मैं ताक़त नहीं रखता के तू फ़रावानी, मोहब्बत से मुझ पर वह बार लाद दे जो मुझे ग़रां बार कर दें और मुझे इस तरह अपने हाथ से न छोड़ दे जिस तरह उसे छोड़ देता है जिसमें कोई भलाई न हो और न मुझे उससे कोई मतलब हो और न उसके लिये तौबा व बाज़ग़शत हो। और मुझे इस तरह न फेंक दे जिस तरह उसे फेंक देता है जो तेरी नज़र तवज्जो से गिर चुका हो। और तेरी तरफ़ से ज़िल्लत व रूसवाई उस पर छाई हुई हो बल्कि गिरने वालों के गिरने से और कजरूओं खौफ़ व हेरास से और फ़रेबखोर्दा लोगों के लग़्जिश खाने से और हलाक होने वालों के वरतए हलाकत में गिरने से मेरा हाथ थाम ले और अपने बन्दों और कनीज़ों के मुखतलिफ़ तबकों को जिन चीज़ों में मुब्तिला किया है उन से मुझे आफ़ियत व सलामती बख़्श। और जिन्हें तूने मूरिदे इनायत करार दिया, जिन्हें नेमतें अता कीं, जिनसे राजी व खुशनूद हुआ। जिन्हें काबिले सताइश ज़िन्दगी बख़्शी। और सआदत व कामरानी के साथ मौत दी उनके मरातब व दरजात पर मुझे फ़ाएज़ कर और वह चीज़ें जो नेकियों को महो और बरकतों को ज़ाएल कर दें उनसे किनाराकशी उस तरह मेरे लिये लाज़िम कर दे जिस तरह गर्दन में पड़ा हुआ तौक़। और बुरे गुनाहों और रूसवा करने वाली मासियतों से अलाहेदगी व नफ़रत को मेरे दिल के लिये इस तरह ज़रूरी करार दे जिस तरह बदन से चिमटा हुआ लिबास और मुझे दुनिया में मसरूफ़ करके के जिसे तेरी मदद के बग़ैर हासिल नहीं कर सकता उन आमाल से के जिनके अलावा तुझे कोई और चीज़ मुझसे खुश नहीं कर सकती, रोक न दे और इस पस्त दुनिया की मोहब्बत के जो तेरे हां की सआदते अबदी की तरफ़ मुतवज्जो होने से मानेअ और तेरी तरफ़ वसीला तलब करने से सद्दे राह और तेरा तकरूब हासिल करने से ग़ाफ़िल करने वाली है मेरे दिल से निकाल दे। और मुझे वह मुल्के इस्मत अता फ़रमा जो मुझे तेरे खौफ़ से करीब, इरतेकाबे मोहररमात से अलग और कबीरा गुनाहों के बन्धनों से रिहा कर दे। और मुझे गुनाहों की आलूदगी से पाकीज़गी अता फ़रमा और मासियत की कसाफ़तों को मुझसे दूर कर दे और अपनी आफ़ियत का जामा मुझे पहना दे और अपनी सलामती की चादर उढा दे और अपनी वसीअ नेमतों से मुझे ढांप ले और मेरे लिये अपने अताया व इनआमात का सिलसिला पैहम जारी रख और अपनी तौफ़ीक़ व राहे हक़ की राहनुमाई से मुझे तक्रवीयत दे और पाकीज़ा नीयत, पसन्दीदा गुफ़तार और शाइस्ता किरदार के सिलसिले में मेरी मदद फ़रमा। और अपनी क़वत व ताक़त के बजाए मुझे मेरी क़वत व ताक़त के हवाले न कर और जिस दिन मुझे अपनी मुलाकात के लिये उठाए मुझे ज़लील व

खवार और अपने दोस्तों के सामने रूसवा न करना, और अपनी याद मेरे दिल से फ़रामोश न होने दे और अपना शुक्र व सिपास मुझसे ज़ाएल न कर, बल्कि जब तेरी नेमतों से बेखबर, सहो व ग़फ़लत के आलम में हूँ, मेरे लिये अदाए शुक्र लाज़िम करार दे। और मेरे दिल में यह बात डाल दे के जो नेमतें तूने बख़्शी हैं उन पर हम्द व तौसीफ़ और जो एहसानात मुझ पर किये हैं उनका एतराफ़ करूँ और अपनी तरफ़ मेरी तवज्जो को तमाम तवज्जो करने वालों से बालातर और मेरी हम्द सराई को तमाम हम्द करने वालों से बलन्दतर करार दे और जब मुझे तेरी एहतियाज हो तो मुझे अपनी नुसरत से महरूम न करना और जिन आमाल को तेरी बारगाह में पेश किया है उन को मेरे लिये वजहे हलाकत न करार देना। और जिस अमल व किरदार के पेशे नज़र तूने अपने नाफ़रमानों को धुात्कारा है यूँ मुझे अपनी बारगाह से धुत्कार न देना। इसलिये के मैं तेरा मुतीअ व फ़रमाबरदार हूँ और यह जानता हूँ के हुज्जत व बुरहान तेरे ही लिये है और तू फ़ज़ल व बख़्शिश का ज़्यादा सज़ावार और लुत्फ़ व एहसान के साथ फ़ायदा रसां और इस लाएक है के तुझसे डरा जाए और इसका अहल है के मग़फ़ेरत से काम ले और इसका ज़्यादा सज़ावार है के सज़ा देने के बजाय माफ़ कर दे और तशहीर करने के बजाए पर्दापोशी तेरी रोश से करीबतर है तो फिर मुझे ऐसी पाकीज़ा ज़िन्दगी दे जो मेरे हस्बे दिल ख़्वाह उमूर पर मुशतमिल और मेरी और मेरी दिलपसन्द चीज़ों पर मुन्तही हो। उस तरह के जिस काम को तू नापसन्द करे उसे बजा न लाउं और जिससे मना करे उसका इरतेकाब न करूँ। और मुझे उस शख्स की सी मौत दे जिसका नूर उसके आगे और उसके दाहेनी तरफ़ चलता हो और मुझे अपनी बारगाह में आजिज़ व निगोंसार और लोगों के नज़दीक बावेकार बना दे और जब तुझसे तखलिया में राज़ व नियाज़ करूँ, तू मुझे पस्त और सराफ़गन्दा और अपने बन्दों में बलन्द मरतबा करार दे और जो मुझसे बेनियाज़ हो उससे मुझे बेनियाज़ कर दे और मेरे फ़क्द व एहतियाज को अपनी तरफ़ बढ़ा दे और दुश्मनों के खज़ाए (वीरलब) बलाओं के दुरूद और ज़िल्लत व सख़्ती से पनाह दे और मेरे उन गुनाहों के बारे में के जिन पर तू मुतलाअ है उस शख्स के मानिन्द मेरी परदापोशी फ़रमा के अगर उसका हिल्म मानेअ न होता तो वह सख़्त गिरफ़्त पर कादिर होता और अगर उसकी रविश में नर्मी न होती तो वह गुनाहो पर मुवाख़ेज़ा करता। और जब किसी जमाअत को तू मुसीत में गिरफ़्तार या बला व नकहत से दो-चार करना चाहे तो दरसूरती के मैं तुझसे पनाह तलब हूँ इस मुसीबत से निजात दे और जबके तूने मुझे दुनिया में रूसवाई के मौक़फ़ में खड़ा नहीं किया तो इसी तरह आख़ेरत में भी रूसवाई के मक़ाम पर खड़ा न करना और मेरे लिये दुनयवी नेमतों को अख़रवी नेमतों से और क़दीम फ़ायदों को जदीद फ़ायदों से मिला दे और मुझे इतनी मोहलत न दे के उसके नतीजे में मेरा दिल सख़्त हो जाए और ऐसी मुसीबत में मुब्तिला न कर जिससे मेरी इज़्जत व आबरू जाती रहे और ऐसी ज़िल्लत से दोचार न कर जिससे मेरी क़द्र व मन्ज़िलत कम हो जाए और ऐसी ऐब में गिरफ़्तार

न कर जिससे मेरा मरतबा व मक़ाम जाना न जा सके। और मुझे इतना ख़ौफ़ ज़दा न कर के मैं मायूस हो जाऊं और ऐसा ख़ौफ़ न दिला के हरासां हो जाऊं।

मेरे ख़ौफ़ को अपनी वर्इद व सरज़न्श में और मेरी अन्देशे को तेरे उज़्र तमाम करने और डराने में मुनहसिर कर दे और मेरे ख़ौफ़ व हेरास को आयाते (कुरानी) की तिलावत के वक़्त करार दे और मुझे अपनी इबादत के लिये बेदार रखने, ख़लवत व तन्हाई में दुआ व मुनाजात के लिये जागने सबसे अलग रहकर तुझसे लौ लगाने, तेरे सामने अपनी हाजतें पेश करने, दोज़ख से गुलू खलासी के लिये बार बार इल्तिजा करने और तेरे उस अज़ाब से जिसमें अहले दोज़ख गिरफ़्तार हैं पनाह मांगने के वसीले से मेरी रातों को आबाद कर और मुझे सरकशी में सरगरदां छोड़ न दे और न ग़फ़लत में एक ख़ास वक़्त तक ग़ाफ़िल व बेख़बर पड़ा रहने दे और मुझे नसीहत हासिल करने वालों के लिये नसीहत इबरत हासिल करने वालों के लिये इबरत और देखने वालों के लिये फ़ित्ना व गुमराही का सबब न करार दे और मुझे उन लोगों में जिनसे तू (उनके मक़ की पादाश में) मक़ करेगा शुमार न कर और (इनआम व बख़िशश के लिये) मेरे एवज़ दूसरे को इनतेखाब न कर। मेरे नाम में तगय्युर और जिस्म में तब्दीली न फ़रमा और मुझे मखलूकात के लिये मज़हका और अपनी बारगाह में लाएके इस्तेहज़ा न करार दे। मुझे सिर्फ़ उन चीज़ों का पाबन्द बना जिनसे तेरी रज़ामन्दी वाबस्ता है और सिर्फ़ उस ज़हमत से दो चार कर जो (तेरे दुश्मनों से) इन्तेक़ाम लेने के सिलसिले में हो और अपने अफ़ो व दरगुज़र की लज़ज़त और रहमत, राहत व आसाइश गुल व रैहान और जन्नते नईम की शीरीनी से आशना कर और अपनी वुसअत व तवंगरी की बदौलत ऐसी फ़रागत से रूशिनास कर जिसमें तेरे पसन्दीदा कामों को बजा ला सकूँ, और ऐसी सई व कोशिश की तौफ़ीक़ दे जो तेरी बारगाह में तकरूब का बाएस हो और अपने तोहफ़ों में से मुझे नित नया तोहफ़ा दे और मेरी अखरवी तिजारत को नफ़ाबख़श और मेरी बाज़गशत को बेज़रर करार दे और मुझे अपने मक़ाम व मौक़फ़ से डरा और अपनी मुलाकात का मुश्ताक़ बना और ऐसी सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा के जिसके साथ मेरे छोटे और बड़े गुनाहों को बाक़ी न रखे और खुली और ढकी मासियतों को महो कर दे और अहले ईमान की तरफ़ से मेरे दिल से कीना व बुग़ज़ को निकाल दे और इन्केसार व फ़रवतनी करने वालों पर मेरे दिल को मेहरबान बना दे और मेरे लिये तू ऐसा हो जा जैसा नेकोकारों के लिये है और परहेज़गारों के ज़ेवर से मुझे आरास्ता कर दे और आईन्दा आने वालों में मेरा ज़िक़े ख़ैर और बाद में आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक़े रोज़े अफ़ज़ों बरकरार रख और साबिकूनल अक्वलून के महल व मक़ाम में मुझे पहुंचा दे और फ़राखी नेमत को मुझ पर तमाम कर और उसकी मनफ़अतों का सिलसिला पैहम जारी रख। अपनी नेमतों से मेरे हाथों को भर दे। और अपनी गरां क़द्र बख़िशशों को मेरी तरफ़ बढ़ा दे और जन्नत में जिसे तूने अपने बरगुज़ीदा बन्दों के लिये सजाया है मुझे अपने पाकीज़ा दोस्तों का हमसाया करार दे और उन जगहों में जिन्हें अपने दोस्तदारों के लिये मुहय्या किया है, मुझे उम्दा व नफ़ीस अतियों के ख़लअत ओढ़ा दे और मेरे लिये वह आरामगाह

के जहां में इत्मीनान से बेखटके रहूं और वह मन्ज़िल के जहां में ठहरूं और वह मन्ज़िल के जहां में ठहरूं और अपनी आंखों को ठण्डा करूं, अपने नज़दीक करार दे। और मुझे मेरे अज़ीम गुनाहों के लेहाज़ से सज़ा न देना और जिस दिन दिलों के भेद जांचे जाएंगे, मुझे हलाक न करना हर शक व शुबह को मुझसे दूर कर दे और मेरे लिये हर सिम्त से हक पहुंचने की राह पैदा कर दे और अपनी अता व बख़िश के हिस्से मेरे लिये ज़्यादा कर दे और अपने फ़जल से नेकी व एहसान से हिज़ फ़रावां अता कर। और अपने हां की चीज़ों पर मेरा दिल मुतमईन और अपने कामों के लिये मेरी फ़िक्र को यक सू कर दे और मुझसे वही काम ले जो अपने मखसूस बन्दों से लेता है। और जब अक्लें ग़फ़लत में पड़ जाएं उस वक़्त मेरे दिल में इताअत का वलवला समो दे और मेरे लिये तवंगरी, पाक दामनी, आसाइश, सलामती, तन्दरूस्ती, फ़िराखी, इत्मीनान और आफ़ियत को जमा कर दे और मेरी नेकियों को गुनाहों की आमैज़िश की वजह से और मेरी तन्हाइयों को उन मफ़सदों के बाएस जो अज़ राहे इम्तेहान पेश आते हैं, तबाह न कर, और अहले आलम में से किसी एक के आगे हाथ फैलाने से मेरी इज़्जत व आबरू को बचाए रख और उन चीज़ों की तलब व ख़्वाहिश से जो बद किरदारों के पास हैं मुझे रोक दे और मुझे ज़ालिमों का पुश्त पनाह न बना और न (एहकामे) किताब के महो करने पर उनका नासिर व मददगार करार दे और मेरी उस तरह निगेहदाशत कर के मुझे ख़बर भी न होने पाए ऐसी निगेहदाशत के जिसके ज़रिये तू मुझे (हलाकत व तबाही) से बचा ले जाए और मेरे लिये तौबा व रहमत, लुत्फ़ व राफ़त और कुशादा रोज़ी के दरवाज़े खोल दे। इसलिये के मैं तेरी जानिब रग़बत व ख़्वाहिश करने वालों में से हूं, और मेरे लिये अपनी नेमतों को पायाए तकमील तक पहुंचा दे इसलिये के इन्आम व बख़िश करने वालों में सबसे बेहतर है और मेरी बकिया उम्र को हज व उमरा और अपनी रज़ाजोई के लिये करार दे ऐ तमाम जहानों के पालने वाले! रहमत करे अल्लाह तआला मोहम्मद (स0) और उनकी पाक व पाकीज़ा आल (अ0) पर और उन पर और उनकी औलाद पर हमेशा हमेशा दुरूद व सलाम हो।